Sanskrit (Honours)
B.A. (1st Part)

डॉ० [illegible]
अतिथि शिक्षक
आर.सी.एस. कॉलेज, मंझौल
बेगूसराय

काव्यदीपिका
(द्वितीयाध्याय)

पूर्व में बताया गया है काव्यदीपिकाकार आचार्य कांतिचन्द्र भट्टाचार्य अलंकार सम्प्रदाय में सभी मान्य परंपराओं में सामंजस्य बनाकर चलते हैं। तभी तो उनकी 'काव्यदीपिका' अलंकारशास्त्र की इन्द्रधनुष प्रतीत होती है जिसके अलंकारशास्त्र के सभी रंग अपनी सुन्दरता बिखेर रहे हैं।

पूर्व में यह भी बताया गया है कि अग्रकाल में किसी मान्य आचार्य के अभाव में अलंकार सम्प्रदाय को वह प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त हुई जिसकी वो हकदार थी। सम्भवतः आचार्य दण्डी के काव्यादर्श को व्याख्यायित करने वाला कोई बड़ा आलोचक नहीं मिला। यदि आनन्दवर्धन के अनुयायी अभिनवगुप्त के जैसा अलंकार सम्प्रदाय का भी कोई बड़ा आचार्य मिलता तो अलंकार

सम्प्रदाय काफी आगे जाता, क्योंकि आचार्य दण्डी द्वारा काव्य की शोभा करने वाले सभी तत्त्व इसमें समावेशित कर लिए गए थे। तभी तो इसे काव्य की आत्मा तक कहा गया। यह सत्य है कि अर्थालंकारों में विशेषोक्ति, समासोक्ति, अन्योक्ति आदि अलंकार इसे आत्मा तक पहुँचा ही देते हैं।

इसी बीच आचार्य वामन प्रकट होते हैं जो 'रीति' को ही काव्य की आत्मा बताते हैं। ऐसी बात नहीं है कि 'रीति' शब्द आचार्य वामन द्वारा दिया गया है या इसके बारे में पहले लोगों को मालूम नहीं था। परन्तु पहले, वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली आदि रीतियाँ अपेक्षाकृत शैली के रूप में ही प्रचलित थीं। परन्तु आचार्य वामन ने इसमें गुणों का भी समावेश कर दिया तथा गुणों से युक्त रीतियों को उन्होंने काव्य की आत्मा माना। परन्तु काव्यशास्त्र का यह सम्प्रदाय अधिक मान्य नहीं हो सका।

Rukmi Rao - Pk

Dhm —